हिंदी साहित्य एवं मानवीय मूल्य

संपादक
डॉ. गणेशचंद्र शिंदे
डॉ. संदीप एस. पाईकराव
डॉ. साईनाथ ग. शाहू

परिकल्पना

© सम्पादकाधीन

प्रथम संस्करण : 2022
ISBN : 978-93-95104-08-1
मूल्य : ₹ 995

शिवानंद तिवारी द्वारा परिकल्पना, के-37, अजीत विहार, दिल्ली-110084
से प्रकाशित और शेष प्रकाश शुक्ल, दिल्ली से टाइप सेट होकर
कार्मेक्ट प्रिंटर्स, दिल्ली-110032 में मुद्रित

श्रद्धेय डॉ. शंकरगढ़ी चड्ढा साहब
की पावन स्मृति को
सादर समर्पित!

अनुक्रम

संपादकीय — 5

1. साहित्य और मानवीय मूल्य — 15
   —प्रो. डॉ. प्रतिभा जी. येरेकार
2. श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में निहित मानव-मूल्य — 19
   —डॉ. परविंदरकौर महाजन कोल्हापूरे
3. मृदुला सिन्हा के कथा साहित्य में मानव मूल्य — 24
   —डॉ. मनीषा शर्मा
4. साहित्य एवं मानवीय मूल्य — 30
   —डॉ सुभाष क्षीरसागर
5. मूल्य, जीवन मूल्य और साहित्य — 34
   —प्रा. डॉ. मनोहर गंगाधरराव चपळे
6. साहित्य में मानवीय मूल्य — 38
   —डॉ. शेख शहेनाज बेगम अहेमद
7. हिंदी साहित्य में मानवीय मूल्य — 45
   —डॉ. शेखर घुंगरवार
8. मानवीय मूल्य नैतिकता : उत्पत्ति और विकास — 51
   —डॉ. संतरा चौहान
9. साहित्य एवं मानवीय मूल्य — 54
   —डॉ. किशोरसिंह सोलंकी
10. पत्रकारिता और मानवीय मूल्यों की उपेक्षा — 57
    —डॉ. बेंद्रे बसवेश्वर नागोराव
11. भक्ति साहित्य तथा मानवीय मूल्य — 61
    —डॉ. अमर आनंद आलदे
12. भक्तिकालीन साहित्य में मानवीय मूल्य — 65
    —अर्जुन कुमार
13. आंबेडकरवादी कविताओं में संवैधानिक मानवीय मूल्य — 69
    —डॉ. रगडे परसराम रामजी
14. समकालीन कवि धूमिल के काव्य में मानवीय मूल्य — 75
    —डॉ. मुकुंद कवडे

6. साहित्य में मानवीय मूल्य

डॉ. शेख शहेनाज बेगम अहेमद
हिंदी विभागाध्यक्ष
हुतात्मा जयवंतराव पाटील महाविद्यालय
हिमायतनगर, नांदेड

मूल्यों का प्रारंभ परिवार से होता है। परिवार के दायरे से बाहर निकलकर मनुष्य व्यापक समाज में आता है। ग्राम, प्रांत, देश सब उन व्यापक समाज के घटक है। अतः साहित्य समाज का दर्पण है। उपनिषदों के 'सत्यम' पद धर्माचार से लेकर कबीर तथा तुलसीदास तथा रहीम के नीति काव्य तक व्याप्त नीति साहित्य मानव मूल्यों की प्रतिष्ठा का प्रयास प्रयास है। साहित्य जिन मानव मूल्यों को ग्रहण कर उनके स्वरूप को अभिव्यक्त करता है, वे साहित्यिक मूल्य कहलाते है । मानव मूल्य एवं साहित्यिक मूल्य वस्तुतः एक ही है। मूल्य समाज की मान्यताओं और धारणाओं के अनुसार बनते-मिटते और बदलते रहते है। किन्तु शाश्वत मूल्य न कभी बदलते है और न मिटते है।

आधुनिक साहित्य में 'मूल्य' शब्द का प्रयोग वैयक्तिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक स्तर का संपूर्ण मानव व्यवहार के मानदंड के रूप में किया जाता है। 'मूल्य' शब्द का आवश्यकता प्रेरणा, आदर्श, अनुशासन, प्रतिमान आदि अनेक अर्थों में प्रयोग होता है। आज मनुष्य पुराने विचारों को कालबाह्य समझने लगा है, प्राचीन मूल्य अस्वीकृति हो रहे है और नए-नए मूल्य स्वीकार किए जा रहे है।

भारतीय संस्कृति में वर्गचतुष्टय का एक सुभाषित विचारणीय प्रतित होता है, "आहारनिद्राभय मैथुनच, सामान्यमेतम् पशुभिः परिणाम धर्मोहितपु अधिको विशेषः धर्मेणहीनः पशुभिः समान।"[1] यहाँ धर्मपरंपरा उत्कृष्ट मूल्य मानते हुए कहा गया है कि धर्म के अभाव में मनुष्य पशुओं से श्रेष्ठ नहीं है। अर्वाचीन साहित्य में भी मानव व्यवहार को दिशा देने का बहुत प्रयास हुआ है, पाश्चात्य विद्वानों ने अच्छे बुरे की ज्ञानबीन मूल्य के संदर्भ में की है। अर्बन ने मूल्य की तीन संक्षिप्त परिभाषाएँ प्रस्तुत की है। पहली व्याख्या के अनुसार, "मानवीय इच्छा की तृप्टि करें वही मूल्य है।" दूसरी व्याख्या में "मूल्य वह वस्तु है जो जीवन को सदैव विकास की ओर ले जाती है और उसे सुरक्षित रखती है।" तीसरी परिभाषा के अनुसार, "जीवन-मूल्यों के संबंध में अनेक मत प्रचलित है।" मूल्यों की परिभाषा की संकुचित सीमा में सही-सही नहीं बांधा जा सकता। हर एक समाज अपनी आवश्यकता के अनुसार मूल्यों का निर्माण करता है।

धर्मवीर भारती कहते है, "पुराने मूल्य अब मिथ्या लगने लगे है। इस प्रकार की श्रध्दा, आस्था और करुणा अमानवीय वृत्तियों को जन्म देती है, वे मानवीय गौरव को प्रतिष्ठित करने की बजाए उसको विकलांग बनाते है। जैसे श्रध्दा, आस्था, करुणा दया आदि मूल्य आज समाज में कम नजर आते है। उन्हीं ही जीवन-मूल्यों की कसौटी है, उन व्यवहारों को ही जीवनमूल्य माना जाता है। हर एक धर्म में कुछ नैतिक आदर्श होते है, उनके आधार पर ही समाज में अनेक नये मूल्यों का प्रचलन होता रहता है।"[2]

मूल्यों द्वारा सामाजिक व्यवस्था का निर्माण होता है। मूल्यों का प्रश्न केवल आयामों के लिए महत्व रखता है, ऐसा नही है। साहित्य के प्रत्येक अध्येता के लिए यह एक गुरूतार प्रश्न है और लेखक के लिए तो उसकी मौलिकता असंदिग्ध है, क्योंकि कृतिकार अपनी कृत अपनी कृति का सबसे पहला और सबसे अधिक निर्मम परीक्षक है। प्राचीन युग में राज्य, धर्म एवं समाज के द्वारा मूल्यों का निर्धारण किया जाता था। किंतु आज वैसा नही है, इस मत को व्यक्त करते हुए डॉ. देवराज उपाध्याय कहते है, "मनुष्य अपना कर्ता-धर्मा स्वयं है, अर्थों तथा मूल्यों का निर्णायक भी वही है। पुराने और नये मूल्यों का संघर्ष आज अत्यंत प्रखरता से अनुभव किया जा रहा है। साहित्य पाठकों को जीवन के यथार्थ से जोड़ता है, और नैतिक मूल्यों के प्रति आस्था उत्पन्न करता है।"[3] साहित्य शब्द काव्यशास्त्र में, "साहित्यस्य भावः इति साहित्यम् ।" इसके अनुसार साहित्य में हित की भावना का होना अनिवार्य है। साहित्य की पहचान का वास्तविक आधार आज भी मानव-मूल्य ही है। साहित्य जो मानवीय संस्कृति सभ्यता एवं व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति है। साहित्य और जीवन मूल्यों का शाश्वत संबंध है। रचना के द्वारा आनंद की सृष्टि तथा समाज मार्गदर्शक के रूप में होता है। इस संदर्भ में डॉ. जगदीशचंद्र गुप्त का मत है, "कला साहित्य दोनों एक प्रकार से जीवन का ही परिविस्तार करते है, मानव मूल्यों की स्थापना साहित्यकार से इस बात की अपेक्षा रखती है कि वह साहित्यिक मूल्यों को भी उतना ही समादर प्रदान करे जितना मानव-मूल्यों की, क्योंकि तत्वतः दोनो एक ही है।"[4]

भारतीय जीवन एवं साहित्य में मूल्यों के चिंतन की परंपरा प्राचीन है। मानव मूल्य व्यक्ति के आचरण को निर्देशित और मूल्यांकन करने के आदर्श मापदंड है। साहित्य का जीवन मूल्यों के साथ दोहरा संबंध है। एक ओर जहाँ साहित्य स्वच्छ दर्पण बनकर अपने समय के सामाजिक मूल्यों को प्रतिबिंबित करता है तो दूसरी ओर उनकी मीमांसा करके उनके संशोधित रूप प्रस्तुत कर समाज विशेष के सदस्यों को नये मानव मूल्यों के निर्माण की प्रेरणा देता है। "साहित्य में व्यक्त वे सभी घटनाएँ जो मानव जीवन के विकास क्रम में योग लाने वाली है अथवा वे क्रियाएँ जो मानव की मूल प्रवृत्तियों का सम्यक पोशण एवं संवर्धन करती है। मानवतावाद के अंतर्गत ली जाएंगी। हिंदी साहित्य में वेद हमारे जीवन की आधारपीलता है।"[5] जो हमारे स्वार्थ,

लोभ, घृणा कट्टरता, हठवादिता आदि का उन्मूलन कर प्रेम, सेवा, त्याग, कर्तव्यनिष्ठा समर्पण एवं उत्सर्ग का भाव सिखाता है। वेदों में वर्णिता, समता, सहायता और स्नेह का यह आदर्श मानव समाज के उन्नयन, व्यक्ति के सुख व्यवहार की सात्विकता की कामना के रूप में अभिव्यक्त हुई है :

"सहृदयं सांमनस्यमविद्वेषं कृणोमि वः।
अन्योन्यमभिहर्यत वत्सं जातमिवाघ्न्या।।"[6]

भारतीय जीवन को सत्यनिष्ठ, संयत उदात तथा औदार्य भावना से मुक्त बनाने में वैदिक ऋचाओं ने बड़ी प्रेरणा दी है। आगे चलकर इस भावना को उपनिषदों, पुराणों और गीता में विस्तार मिला। परम एकत्व के इस आदर्श का विवेचन बड़ी विशदता के साथ गीता में किया गया है। सत्य, अहिंसा, अभय, शांति, अहंकार, त्याग, दया, क्षमा, पवित्रता तथा मैत्री भाव जैसे मानव मूल्यों का उपदेश श्रीकृष्ण स्वयं अर्जुन को देते है :

"अहिंसा सत्यमक्रोधस्त्यागः शांतिरपैशुनमा
दया भूतेष्वलोलुप्त्वं मार्दवं ह्रीरचापलम्।।
तेजः क्षमा धृतिः शौचमद्रोहो नाति मानिता
भवन्ति सम्पद दैवीमभिजातस्य भारत।"[7]

बौध्द तथा जैन साहित्य में भी मानवीय मूल्यों की प्रबल भावना दिखाई देती है। बौध्द धर्म में करूणा का स्वर सर्वोच्च है और करूणा, मैत्री और भ्रातृत्व की भावना है। बौध्द धर्म को ऐसी विषेशता और उपयोगिता के महत्व को स्वीकारते हुए डॉ. अंबेडकर ने कहा था कि मैं बौध्द धर्म को पसंद करता हूँ क्योंकि उन तीन सिध्दांतों का समन्वित रूप जो अन्य धर्मों में नहीं मिलता-पूजा, करूणा तथा समता की शिक्षा बौध्द धर्म देता है। जैन साहित्य में अहिंसा को सर्वाधिक महत्व दिया गया है। मानव मूल्य की दृष्टि से हिंदी साहित्य समृध्द और संम्पुष्ट है। आदिकालीन हिंदी साहित्य से लेकर समकालीन हिंदी साहित्य में जीवन मूल्यों की अभिव्यक्ति में एकता का स्वर मिलता है। "साहित्य का मूल उद्देश्य जीवन और समाज की कुरीतियों व बुराइयों से हटकर स्वस्थ सुंदर और आनंदमय जीवन की ओर अग्रसर करना है। साहित्यकार व्यक्ति से अधिक समाज, समाज से अधिक राष्ट्र को महत्व देता है। अपनी लेखनी के माध्यम से मानव में दया, प्रेम, त्याग, सहभाव उदारता तथा परोपकार जैसे मानव मूल्यों की प्रतिष्ठा के लिए प्रेरित करता है।"[8] संत कबीर अपने समय में देखा कि लोक मानव का दर्पण कुरीतियों बाह्यडम्बरों और अंधविश्वासों से इतना धूमिल हो गया है कि वह सत्य को प्रतिबिंबित नही कर सकता। कबीर ने दया, विश्व, बंधुत्व और प्रेम की भावना पर विशेष जोर दिया। कबीर ने मानवतावादी भाव से अप्राणित होकर कहा :

"दया दिल में राखिये, तू क्यों निरदयी होय।
साईं के सब जीव है, कीडी कुंजर सोय।।"[9]

कबीर की मानवतावादी जीवन दृष्टि के विषय में डॉ. पारसनाथ तिवारी लिखते है, "सच्ची बात है कि हिंदी साहित्य में कबीर से बड़ा मानववादी कोई नही हुआ। उन्होंने तत्कालीन भारतीय समाज में प्रचलित समस्त अंधविश्वासों, रूढ़ियों तथा मिथ्या सिध्दांतो द्वारा प्रचारित सामाजिक क्षमताओं विशमताओं का मूलोच्छेद प्रहार किया है। सामाजिक स्थिति की दृष्टि से मध्यकाल का पूर्वार्ध भी आज की तरह विघटन नैतिक पतन, धार्मिक वैमनस्य वर्ग भेद आचरण हीनता जैसे अनेक अस्वस्थ प्रवृत्तियों की क्रीडास्थली बन गया था।"[10]

वर्तमान दौर के परिवेशगत हलचल, बाजारवाद, मीडिया विस्फोट, नारी एवं दलित विमर्श, मानवीय मूल्यों के क्षरण की चर्चा सभी भाषाओं के साहित्य में हो रही है। यह सही है कि कहीं अधिक तो कहीं कम। रमेष उपाध्याय का मानना है कि, "साहित्य का निर्माण साहित्येत्तर सामग्री से होता है और अच्छा साहित्य केवल साहित्य पढ़ने से नहीं, बल्कि मानव जीवन को बेहतर तथा अधिक सुंदर बनाने के उद्देश्य से समाज को बदलने की प्रक्रिया में पैदा होती है।"[11] भारतीय साहित्य विभिन्नता में एकता और एकता में विभिन्नता का साहित्य है। इसमें एक तरफ़ सूर, तुलसी, मीरा, चैतन्य महाप्रभु आदि की अध्यात्मिक भाववादी धारा विद्यमान है तो दूसरी तरफ़ कबीर, नानक, नामदेव, वेमन्ना आदि की भौतिकवादी प्रगतिषील धारा है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार, "सूफियों के प्रेम-प्रबंधों में खंडन-मंडन की बुध्दि को किनारे रखकर मनुष्य के हृदय को स्पर्श करने का ही प्रयत्न किया गया है जिसका प्रभाव हिंदुओं और मूसलमानों पर समान रूप से पड़ा। बीच-बीच में रहस्यमय परोक्ष की ओर जो मधुर संकेत मिलते है, वे बड़े हृदयग्राही होते है। कबीर में जो रहस्यवाद मिलता है वह बहुत-कुछ उन परिभाषित संज्ञाओं के आधार पर है, जो वेदांत और हठयोग में निर्दिष्ट है, लेकिन इन प्रेम प्रबंधकारों ने जिस रहस्यवाद का आभास कराया है, वह शाखा में जायसी कृत महाकाव्य 'पद्मावत' हिंदी काव्य का अद्भूत रत्न है।"[12]

गोस्वामी तुलसीदास ने लोकभाशा अवधी में 'रामचरित्मानस' की रचना कर राम के शील, शक्ति एवं सौंदर्य के चरित्रिक गुणों द्वारा संपूर्ण जनमानस में मानवीय मूल्यों की स्थापना की। तुलसी के राम ने दलित वर्ग के साथ संघर्ष करते हुए कभी भी जीवन-मूल्यों का परित्याग नही किया। लंकाकांड के राम-रावण युध्द प्रसंग में मूल्यों की अनुपम व्याख्या की गई है। यहीं पर दूसरे महाकाव्य महाभारत ने भी भारतीय साहित्य को समग्र रूप से प्रभावित करते हुए कर्म का संदेश दिया। दोनों की गाथा परिवार की है लेकिन जहाँ एक में त्याग है तो वहीं दूसरे में भोग। एक में मूल्यों की रक्षा पग-पग पर हुई है तो दूसरे में मूल्यों का क्षरण। वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य कुछ मायनों में महाभारत की कहानी को दुहराता हु प्रतीत हो रहा है। 'रागदरबारी', 'महाभोज' आदि जैसे उपन्यासों में इसका यथार्थ चित्रण हुआ है।

वाल्मिकि रामायण की कथा को मूल रूप में स्वीकार करते हुए कतिपय फेरबदल के साथ लगभग सभी भारतीय भाषाओं के साहित्य में नहीं अपितु विश्व साहित्य में रामायण की रचना की गई। मध्यकाल के लगभग संपूर्ण भारतीय भक्ति साहित्य का सर्जन वेद, पुराण, संस्कृत, बौध्द, जैन आदि भक्ति एवं श्रृंगार ग्रंथों के आधार पर हुआ है। महादेवी वर्मा ने लिखा है, "वेद साहित्य की चिंतन पद्धति ने यह भारतीय चिंतन को दिशा ज्ञान दिया है तो उसकी रागात्मक अनुभूति ने भावी युगों की काव्य कलाओं में स्पन्दन जगाया है। प्रकृति से रागात्मक संबंध, उस पर चेतन व्यक्तित्व का आरोप, रहस्य को व्यक्त करनेवाली जटिल उक्तियाँ, भक्ति-जनित निवेदन आदि बिना कोई संस्कार छोड़े हुए अन्तर्हित हो गए, यह समझना मानव-चेतना की संश्लिष्टता पर अविश्वास करना होगा।"[13] भक्ति आंदोलन के दौरान रचित भारतीय साहित्य को जीवन-मूल्यों की दृष्टि से सर्वोत्कृष्ट माना गया। कालांतर में पश्चिमी संस्कृति-सभ्यता के प्रभाव, समाज सुधारवाद और स्वाधीनता संग्राम आंदोलन के कारण एक नवीन विचारधारा एवं राष्ट्रीय चेतना का स्वर फुटा।

मध्यकाल के भक्ति आंदोलन की भाँति 19-20 वीं सदी के स्वतंत्रता आंदोलन ने संपूर्ण भारतीय साहित्य को प्रभावित किया। जैसा कि विदित है कि राष्ट्रीयता की अनुगूंज बंग्ला साहित्य के माध्यम से हुई और बाद में उसकी लहर संपूर्ण देश में फैल गई। वर्तमान समय में भूमंडलीकरण और वैश्विकता के कारण भौतिक दूरियों में कमी आई है लेकिन मानव-मानव के बीच की दुरियाँ काफ़ी बढ़ी है। आपाधापी और भागमभाग ने जीवन जीने का ढंग ही बदल दिया है। इसका परिणाम यह हुआ है कि परस्पर स्नेह, सौख्य, सौहाद्र और सामंजस्य आदि की भावनाओं में क्षीणता आयी है। स्वातंत्र्योत्तर भारतीय साहित्य में अगर आज पुराने जीवन मूल्यों में कमी दिखाई है तो इसका कारण बदलता समयचक्र है। आधुनिकता के चिंतन ने मानवीय व्यवहारों में अधिक खुलापन का समावेश कराया है। सामान्यजन भारतीय साहित्य के केंद्र में प्रविष्ट हुआ है। इसी क्रम में विषमता के विरुद्ध आक्रोश, पददलितों के प्रति करुणा उपेक्षितों के प्रति सहानुभूति, तृतीय लिंगी समुदाय के प्रति सहानुभूति का भाव आज के साहित्य का ज्वलंत विषय है। स्त्री, दलित, दिव्यांग और आदिवासी विमर्शों ने नये जीवन मूल्यों की ओर ध्यान आकृष्ट किया है। साहित्य अब धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के प्रयोजनों से इतर सामान्य मनुष्य की प्रतिष्ठा को अपना काव्य बना रहा है। कविता उसी को अपने गायन को विषय बना रही है, "जो बड़े-बड़े शहरों में/गंदी लंबी गटरों में/फुटपाथों पर सोये है/.... हम उनके गायेंगे गान।"[14] यथार्थ की जमीन पर मानवता का हित चिंतन नये जीवन मूल्यों की स्थापना करेगा ही। इसी परिप्रेक्ष्य में मूल्य संकट उत्पन्न होना भी अस्वाभाविक नहीं है, "क्या करोगे समझकर हि रात के दो बजे/मोहल्ले में किसकी कार आती है।"[15] परम्परागत जीवन-मूल्यों में गिरावट का कारण आचरण-व्यवहार में अत्याधिक स्वच्छंदता का अ जाना भी है। इस सच्चाई से

भी किसी को असहमती नही होगी कि जिस तरह का समाज होगा जीवन-मूल्य भी उसी के अनुरूप होंगे। इसी के साथ यह भी सच है कि जिस तरह के जीवन-मूल्य होंगे उसी तरह का समाज निर्मित होगा। इसमें भारतीय साहित्य अपनी भूमिका के निर्वहन में सतत अग्रगामी है।

आधुनिक हिंदी साहित्य कई कालों में विभक्त है। हमारे देश व समाज में इस लंबी अवधि में अनेक सामाजिक, राजनीतिक तथा वैचारिक परिवर्तन हुए। जिसका प्रभाव हिंदी साहित्य पर पड़ा। इस काल के साहित्यकारों ने भारतेंदु, प्रेमधन, बालकृष्ण भट्ट, प्रताप नारायण मिश्र आदि तथा छायावादी व छायावादोत्तर साहित्यकारों ने समाज की हीन व्यवस्था के प्रति अपनी भावनाएँ प्रकट की है तथा सामाजिक पुनरूत्थान की दिशा में सभी प्रकार से योगदान दिया है। भारतीय संस्कृति का वैशिष्टय अहिंसा, समता, सहिष्णुता, सत्यनिष्ठा तथा प्राणी मात्र के प्रति सहानुभूति, स्नेह और करुणा की उदत्त भावनाओं को लेकर है। इन सभी आदर्शों की प्रतिष्ठा हिंदी साहित्य में दर्शनीय है। इसलिए श्रध्दा का संदेश है :

"औरों को हँसते देखो मनु
हँसो और सुख पाओ।
अपने सुख को विस्तृत कर लो
सबको सूखी बनाओ।"[16]

इस प्रकार मानवीय मूल्यों की पूर्ण अवधारणा हिंदी साहित्य में देखने को मिलती है। मानवीय भूमिका पर एक और हमे साहित्य में उदात्त की भावना के दर्पन होते है, तो दूसरी और उनके चरित्रों में हम उस आदर्श को प्रतिष्ठित हुआ पाते है, जिससे समाज में स्वस्थ प्रवृत्तियों का विकास हो सकता है और मानव जाति को उच्चतर जीवन यापन की सही दिशा प्राप्त हो सकती है। साहित्य जीवन, समाज और संसार को संवेदित और समावेशी दृष्टि से देखता है। आज भी कबीर, तुलसी, सूर, मीरा, नानक, नामदेव, वेमन्ना आदि की पंक्तियाँ निराशा और हताश जीवन में आश का संचार करते हुए टुटते-बिचेरते जीवन-मूल्यों को संजोकर रखने का संदेश भी दे रही है।

संदर्भ

1. हितोपदेश, श्लोक, 25
2. धर्मवीर भारती, मानव मुल्य और साहित्य
3. डॉ. देवराज उपाध्याय, साहित्य चिंताः आधुनिक संदर्भ
4. डॉ. जगदीशचंद्र गुप्त, प्रागैतिहासिक भारतीय चित्रकला व भारतीय कला के पदचिन्ह
5. डॉ. प्रेमनारायण शुक्ल, हिंदी साहित्य में विविधवाद ,पृ. 524
6. अथर्ववेद, 3/30
7. गीता 16/2/3
8. संत कबीर का साहित्य, डॉ. विंदु दुबे, पृ. 41